महर्षि वाल्मीकि

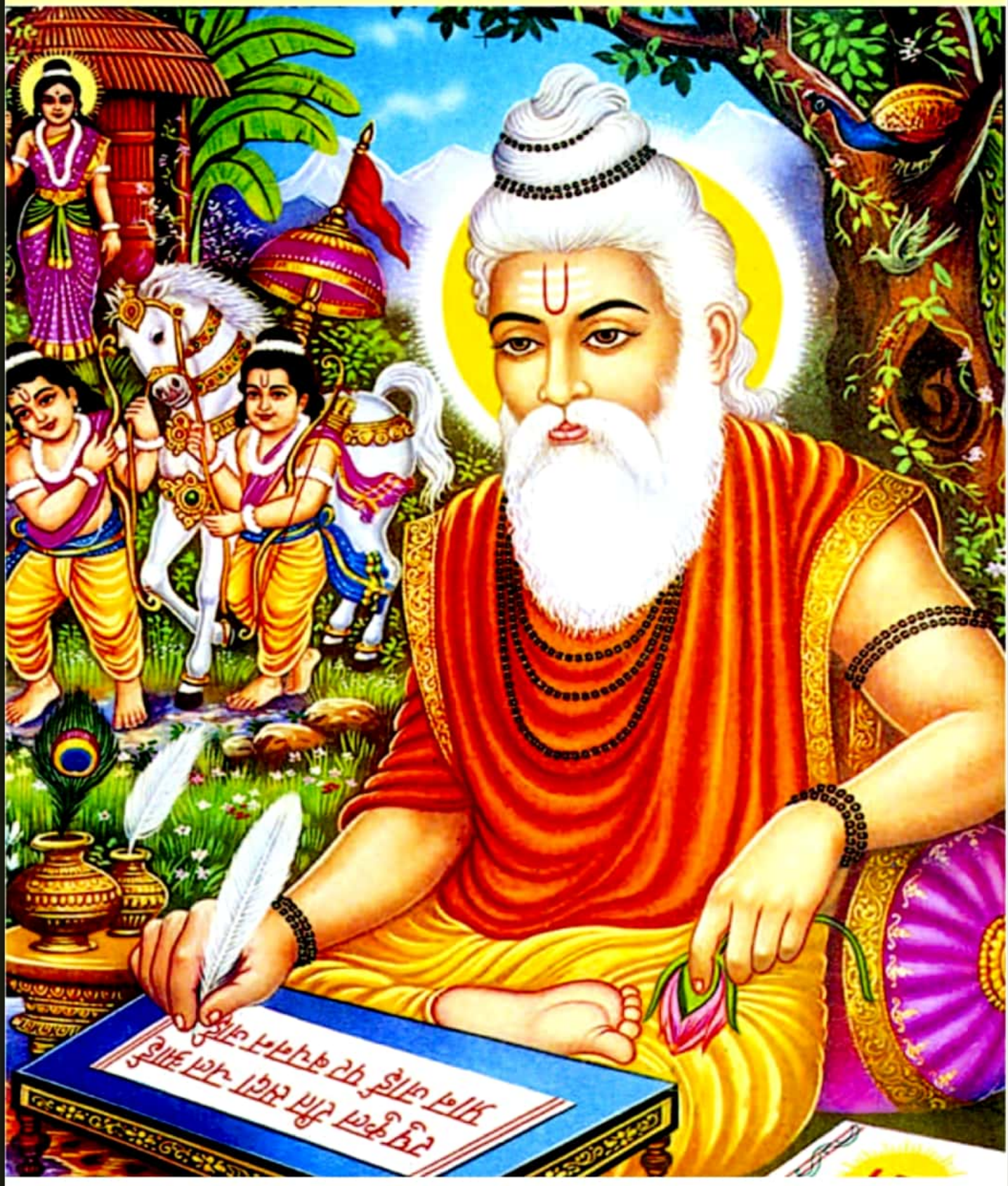

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

महर्षि वाल्मीकि

समूचे जगत् में भारत ऐसी पावन पुण्य धरा है जिस पर आदिकाल से महापुरुष, ऋषि–मुनि व महान वैज्ञानिक, विचारक व समाज सुधारक अवतरित हुये जिन्होंने अपने तपोबल व विलक्षण व्यक्तित्व और कृतित्व द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन किया।

प्राचीन वैदिक काल की महान विभूतियों की प्रथम श्रेणी में थे महर्षि वाल्मीकि। संस्कृत भाषा के आदि कवि एवं विश्वविख्यात हिन्दू महाकाव्य 'रामायण' के रचयिता वाल्मीकि एक महायोगी थे।

महर्षि वाल्मीकि का जन्म नागा प्रजाति में हुआ था। उनके पिता का नाम वरुण और माँ का नाम चार्षणी था। वह अपने माता–पिता की 10वीं संतान थे।

रामायण के रचयिता

प्रभु श्रीराम और माँ सीता की कथा का विवरण ही 'रामायण' है। जिस कवि ने महाकाव्य 'रामायण' की रचना की और उसकी कथा तथा गीत लव–कुश को सिखाये, वे महामुनि 'वाल्मीकि' थे। उनकी रामायण संस्कृत भाषा में है। यह एक अत्यंत सुंदर काव्य है। किसी महानायक की कथा का लंबी कविता के रूप में वर्णन को महाकाव्य कहा जाता है। श्रीरामचन्द्र जी ने भी जब स्वयं 'रामायण' की कथा सुनी थी तो उन्हें अत्यंत आनंद की अनुभूति हुई। जब लव और कुश ने अपने मधुर स्वर में

Scanned by CamScanner

यह कथा उन्हें गाकर सुनाई तो श्रीराम आनन्द विभोर हो गये। लेकिन तब रामचंद्र जी यह नहीं जानते थे कि वे दोनों बालक उनके ही पुत्र हैं।

वाल्मीकि किस प्रकार से मुनि एवं गायक-कवि बने, यह अपने आप में एक अद्‌भुत संयोग है।

बांबी से बाहर

वाल्मीकि नाम उनके माता-पिता द्वारा दिया गया नाम नहीं था। उनका वास्तविक नाम रत्नाकर था। संस्कृत में वाल्मीकि का अर्थ 'बांबी' होता है। कहा जाता है कि उनके एक बांबी से निकलने के कारण ही उनका नाम वाल्मीकि पड़ा। इसके पीछे एक रोचक कथा है-

श्रीराम त्रेता युग में अवतरित हुए और वाल्मीकि भी इसी युग में हुए थे। उस समय गंगा नदी के किनारों पर घना जंगल था। अनेक ऋषियों ने अपने आश्रम वहाँ बना लिए थे जहाँ वे ईश्वर की भक्ति व सत्य की प्राप्ति के लिए तपस्या करते थे। उनमें एक प्राचेतस नाम के मुनि भी थे। उनका एक पुत्र था - रत्नाकर।

जब रत्नाकर बहुत छोटा था तो वह एक दिन जंगल में निकल गया। खेलते-खेलते जब वह रास्ता भूल गया तो रोने-चिल्लाने लगा। उसी समय एक शिकारी उधर से निकला। जब उसने उस नन्हें से बच्चे को रोते देखा तो प्रेमपूर्वक गोद में उठाकर उसे चुप कराया। उस शिकारी का कोई बच्चा नहीं था। वह रत्नाकर को जंगल के बीच बनी अपनी झोपड़ी में ले गया।

इधर जब रत्नाकर घर नहीं लौटा तो उसके पिता प्राचेतस मुनि बहुत

Scanned by CamScanner

चिंतित हो गये। उन्होंने आश्रम के चारों ओर तथा वन में अपने पुत्र की बहुत खोज की किन्तु वे उसे पाने में असफल रहे। अंत में उन्होंने तथा उनकी पत्नी ने मान लिया कि रत्नाकर किसी जंगली पशु का शिकार हो गया है।

शिकारी तथा उसकी पत्नी ने रत्नाकर का प्रेमपूर्वक पुत्र-तुल्य पालन-पोषण किया। धीरे-धीरे रत्नाकर अपने वास्तविक माता-पिता को भूल गया। उसने शिकारी दम्पति को ही अपना पिता व माता समझ लिया। शिकारी ने उसे शिकार खेलने का कौशल सिखाया। रत्नाकर एक चतुर व बुद्धिमान बालक था और जल्दी ही उसने धनुर्विद्या में प्रवीण होकर शिकार करना सीख लिया। अब वह अचूक निशानेबाज शिकारी बन गया।

जब रत्नाकर युवा हुआ तो उसके दत्तक पिता ने शिकारी परिवार की एक सुंदर कन्या ढूंढ कर उसका विवाह करा दिया। कुछ ही वर्षों में उसकी पत्नी ने कुछ बच्चों को जन्म दिया और इस प्रकार रत्नाकर का परिवार बढ़ने लगा। रत्नाकर के लिये अपने बढ़ते परिवार के लिए राशन कपड़ा आदि जुटाना बहुत कठिन हो गया था। केवल शिकार द्वारा परिवार का भरण-पोषण कर पाना असम्भव था। इस अभावग्रस्त स्थिति के कारण वह सदा चिन्तित रहने लगा।

रत्नाकर से वाल्मीकि

एक दिन रत्नाकर सड़क के किनारे अत्यंत चिंताग्रस्त मुद्रा में बैठा था। उसी समय नारद मुनि उधर से निकले। उनके हाथ में एक सुन्दर वीणा थी। वीणा बजाते हुए वे ईश्वर की प्रार्थना करते जा रहे थे।

Scanned by CamScanner

नारद जी कोई साधारण पुरुष नहीं थे। वे तो देवर्षि थे। उन्होंने धरती, आकाश एवं पाताल–तीनों लोकों का विचरण किया था। अचानक उनकी दृष्टि रत्नाकर पर पड़ी। उसके चेहरे पर व्यथा व चिंता के लक्षण स्पष्ट दिख रहे थे। नारद मुनि ने सहानुभूतिवश रत्नाकर से उसकी व्यथा का कारण पूछा।

नारद जी की करुणामयी वाणी सुनकर रत्नाकर को कुछ सांत्वना मिली। उनके मुख मण्डल पर एक दिव्य तेज व सौंदर्य था। जैसे–जैसे रत्नाकर नारद मुनि के कोमल, सुन्दर तथा ओजपूर्ण चेहरे को निहारता गया, उसमें भी एक विलक्षण भाव का संचार होने लगा।

नारद जी एक पेड़ के नीचे बैठकर वीणा बजाते हुए ईश्वर की प्रार्थना करने लगे। रत्नाकर उनसे कितना प्रभावित हुआ था, यह स्पष्ट झलक रहा था।

नारद मुनि ने बीच में रुक कर उससे पूछा–'तुम्हारे जीवन का क्या उपयोग होना चाहिये? इस पर तनिक विचार करो।'

केवल अपने परिवार के भरण–पोषण तक ही अपने जीवन को सीमित रखना उसे अखरने लगा। यह कार्य तो सभी जीव करते हैं। पशु–पक्षियों व वन्य प्राणियों की भी यही दिनचर्या है। यह भाव उसे रह–रह कर मानो झकझोर रहा था।

'मैं क्या कर सकता हूँ, महाराज? मेरा एक बड़ा परिवार है जिसमें मेरे वृद्ध माता–पिता, पत्नी और बच्चे हैं। वे सब मुझ पर ही आश्रित हैं। मुझे उनके लिए भोजन और कपड़ा जुटाना पड़ता है। मुझे केवल शिकार

Scanned by CamScanner

करना ही आता है। इसके अतिरिक्त मैं कुछ नहीं कर सकता।' रत्नाकर ने उत्तर दिया।

नारद जी ने रत्नाकर से कहा, 'तुम राम नाम का जाप करो। इससे तुम्हारे जीवन का विकास होगा तथा नर से नारायण बनने का यही मार्ग है। इसी में तुम्हारे जीवन की सार्थकता है।'

अब रत्नाकर ने अनुभव किया कि मात्र अपने व अपने परिवार के पालन पोषण के लिए सामग्री जुटाना पर्याप्त नहीं है।

रत्नाकर राम नाम का उच्चारण करते हुए तपस्या करने लगा। उसकी आँखें बंद थीं और पूरा ध्यान भगवान् के नाम के उच्चारण पर केंद्रित रहता था। धीरे-धीरे वह अपना अस्तित्व भूल गया। इसी प्रकार ध्यानावस्था में दिन, महीने और अनेक वर्ष बीत गये। उसके चारों ओर दीमकों ने बांबी (घर) बना ली जिसके कारण कोई उसे देख भी नहीं सकता था।

कुछ वर्षों के पश्चात् नारद मुनि फिर वहाँ आए। वे जानते थे कि बांबी के नीचे रत्नाकर ही है। उन्होंने सावधानी से बांबी को साफ किया। रत्नाकर को आस-पास की कोई सुध नहीं थी और वह अपनी तपस्या में खोया रहा। जब नारद जी ने उसके कान में राम नाम का उच्चारण किया, तब कहीं उसने अपनी आँखें खोलीं और सामने नारद जी को पाया। उसने बैठे-बैठे ही नारद जी को प्रणाम किया।

नारद जी उसे उठाकर धीरे-धीरे उसके शरीर पर हाथ फेरने लगे। अब रत्नाकर में स्फूर्ति आई। उसने फिर नारद जी के चरण स्पर्श किये। मुनि ने उसे गले से लगा लिया और कहा - 'रत्नाकर, मैं तुम्हें आशीर्वाद

Scanned by CamScanner

देता हूँ। भगवान् तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हुए। आज से तुम श्रेष्ठ ब्रह्मऋषि हुए। चूँकि बांबी (वाल्मीकि) से तुम्हारा पुनर्जन्म हुआ है इसलिए तुम वाल्मीकि के नाम से प्रसिद्धि पाओगे।'

यह सुनकर रत्नाकर की आँखों से भावपूर्ण आँसू बहने लगे। वह बोला– 'महाराज, यह सब आपकी ही कृपा है। अच्छे लोगों की संगति से ही मनुष्य ऊपर उठता है। यह केवल आपके मार्गदर्शन व प्रेरणा से संभव हुआ है।'

नारद जी ने उसे आशीर्वाद दिया और अपने रास्ते चले गये।

श्रीराम से मिलना

वाल्मीकि ने गंगा नदी के किनारे अपना आश्रम बनाया। उनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैलने लगी। कई अन्य मुनिगण भी अपने परिवार सहित उनके आश्रम में आ कर उनके शिष्य बन गये। एक दिन श्रीरामचंद्र जी अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ आश्रम में आये। वाल्मीकि बड़े उत्साहपूर्वक उनसे मिले। शिष्यों ने उन्हें हाथ पैर धोने के लिए पानी दिया तथा बैठने के लिए आसन बिछाया। खाने के लिए अतिथियों को ताजा दूध एवं स्वादिष्ट फल दिये गये।

कुछ विश्राम के बाद श्रीरामचंद्र जी ने ऋषि वाल्मीकि को अपनी कहानी सुनाई। उन्होंने बताया कि वे वन में इसलिए आए हैं ताकि अपने पिता की प्रतिज्ञा को पूरा कर सकें। यह सुनकर वाल्मीकि बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा – 'श्रीराम, आप जैसा सत्यवान धरती पर दूसरा कोई नहीं है। अपने पिता का वचन पूरा करने के लिए आपने राजसिंहासन त्याग दिया और वन में आ गए। आप सामान्य मनुष्य नहीं, सर्वशक्तिमान

Scanned by CamScanner

हैं। आपके नाम में इतनी शक्ति है कि उसने मुझ जैसे एक तुच्छ शिकारी को ब्रह्मऋषि बना दिया। आपकी करुणा व दयालुता अथाह है।'

श्रीरामचंद्र जी यह सुनकर मुस्कुराए और बोले–'हे महामुनि, हम यहाँ आपके आश्रम में रहने के लिए आये हैं, कृपया हमें उचित स्थान बतायें।'

आश्रम के निकट ही चित्रकूट पर्वत था। वह रमणीय स्थल था एवं अनेक प्रकार के फल–फूलदार वृक्षों से भरा हुआ था। उन्होंने यही स्थान श्रीरामचंद्र जी को बताया। श्रीरामचंद्र जी सीता तथा भाई लक्ष्मण के साथ कुछ समय तक चित्रकूट में रहे।

श्लोकों में रामायण

वाल्मीकि के मुनि बनने की कथा की तरह ही 'रामायण' की रचना के पीछे भी बहुत रोचक कहानी है।

एक दिन नारद मुनि वाल्मीकि के आश्रम में आए। वाल्मीकि बहुत खुश हुए। उन्होंने बड़े श्रद्धाभाव से दूध और फल नारद जी के सामने रखे। फिर वह शिष्यों के साथ नारद जी के सामने बैठ गये।

तब उन्होंने देवर्षि नारद से कहा–'महामना, आप तीनों लोकों में विचरण करते हैं। अतः कृपया बताएँ कि पृथ्वी पर सर्वगुणसंपन्न कौन है? ऐसा कौन व्यक्ति है जो हमेशा सत्य बोलता हो, धीर–वीर हो? जो प्रत्येक जीव का कल्याण चाहता हो और सभी उससे प्रेम करते हों? ऐसा कौन व्यक्ति है जिसके वचनों एवं कर्मों की देवता भी प्रशंसा करते हैं? संसार में सबसे सज्जन, सद्गुणी पुरुष और सबसे श्रेष्ठ नायक कौन है?'

Scanned by CamScanner

वाल्मीकि के प्रश्नों के उत्तर में नारद जी ने केवल राम का नाम लिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार राम ने राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में जन्म लिया, किस प्रकार राजा जनक की पुत्री सीता से उसका विवाह हुआ और कैसे वह पिता की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए 14 वर्ष के वनवास पर सहर्ष चले गये। उन्होंने वाल्मीकि को विस्तारपूर्वक बताया कि किस प्रकार रावण ने सीता का हरण किया, किस प्रकार रावण का राम द्वारा वध हुआ, कैसे श्रीराम सीता तथा लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे और अंत में उनका राजतिलक हुआ।

श्रीराम के बारे में यह सब जानकर वाल्मीकि अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने नारद मुनि की स्तुति की और उनके सामने नतमस्तक हो गए। देवर्षि ने उन्हें आशीर्वाद दिया और वहाँ से चल दिये।

नारद जी के जाने के कुछ समय बाद वाल्मीकि गंगास्नान के लिए निकले। उनका एक शिष्य भारद्वाज उनके वस्त्र लेकर उनके साथ गया। रास्ते में तमसा नदी थी जिसका पानी एकदम स्वच्छ था। यह देखकर वे अपने शिष्य से बोले–'देखो, इस नदी का जल कितना स्वच्छ है, बिल्कुल एक सज्जन व सदगुणी मानव के मन की तरह। आज मैं यहीं स्नान करूँगा।'

नदी में उतरने के लिए जब वाल्मीकि उचित स्थान की खोज में थे तो उन्हें पक्षियों की मधुर चहक सुनाई दी। उन्होंने ऊपर देखा कि दो पक्षी एक साथ गगन में उड़ रहे हैं। आनंदमग्न युगल पक्षियों को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उसी समय उनमें से एक पक्षी को तीर लगा और वह घायल होकर नीचे गिर पड़ा। वह नर पक्षी था। उसे घायल हुआ देख मादा पक्षी विलाप करने लगी।

Scanned by CamScanner

इस मार्मिक दृश्य को देखकर ऋषिवर वाल्मीकि का हृदय करुणा से भर गया। उन्होंने चारों ओर देखा कि पक्षी को मारने वाला कौन है। पास ही उन्हें एक शिकारी दिखाई दिया जिसने उस पक्षी को मारा था। यह देख कर उनकी वाणी श्राप के रूप में फूट पड़ी, 'क्योंकि तुमने सुखी आनन्दमग्न युगल में से एक पक्षी का वध किया है, इसलिए तुम भी अधिक दिन जीवित नहीं बचोगे।' यह वाक्य उनके होठों से संस्कृत के श्लोक के रूप में निकला।

पक्षी के दर्द से दु:खी होकर ऋषि वाल्मीकि ने शिकारी को श्राप तो दे दिया, किंतु ऐसा करने पर उन्हें बेहद दु:ख हुआ। अपना दु:ख उन्होंने शिष्य भारद्वाज के सामने प्रकट किया। वे स्वयं आश्चर्यचकित रह गए कि कैसे उनके होठों से यह श्लोक निकला।

जब वह अपनी वाणी से निकले श्लोक के बारे में गहराई से विचार कर रहे थे, उसी समय सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी वहाँ प्रकट हुए और बोले– 'हे महर्षि, जो श्लोक तुम्हारी वाणी से निकला, उसकी प्रेरणा मैंने ही दी थी। नारद जी ने तुम्हें रामायण की कथा सुनाई है। अब तुम श्लोक के रूप में 'रामायण' की रचना करोगे। जो कुछ घटित हुआ है, उसे तुम स्वयं अपनी आँखों से देखोगे और आगे के बारे में जो कुछ तुम कहोगे, वह भी सत्य होगा। तुम्हारे सारे वचन सत्य होंगे।'

ब्रह्मा जी ने आगे कहा–

"जब तक संसार में नदियाँ, पर्वत, वन रहेंगे, लोग 'रामायण' का पठन–पाठन करते रहेंगे।"

ऐसा आशीर्वाद देकर ब्रह्मा जी अंतर्धान हो गये। इसके बाद वाल्मीकि

Scanned by CamScanner

ने 'रामायण' की रचना की। सबसे पहले उन्होंने श्री रामचंद्र जी के पुत्रों 'लव' तथा 'कुश' को श्लोक सिखाये। ये दोनों जुड़वाँ भाई उनके आश्रम में ही जन्मे तथा पले-बड़े हुए थे।

यह भी एक रुचिकर प्रसंग है कि एक महाराजा के वंशज होकर भी लव-कुश का जन्म एक ऋषि के आश्रम में क्यों हुआ?

एक रानी का कुटिया में आगमन

सीता जी को पुनः प्राप्त करने के लिए रामचंद्र जी ने महायुद्ध में रावण का वध किया था। फिर वे सीता जी तथा लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस लौट आए। अयोध्या में कौशल देश के राजा के रूप में उनका राज्याभिषेक किया गया और सीता जी महारानी बनीं। वे सभी प्रकार से आनन्दित थे व उनकी प्रजा भी सुखी एवं सम्पन्न थी। उनकी राज्य व्यवस्था अति उत्तम थी। उनकी ख्याति एक मर्यादा पुरुषोत्तम राजा के रूप में थी।

कुछ समय के बाद सीता जी गर्भवती हुईं। रामचंद्र जी बहुत खुश थे कि उनका वंश जारी रहेगा। एक दिन वे सीता जी से बोले-'सीते, तुम अब माँ बनने वाली हो। तुम्हारी कुछ न कुछ इच्छा तो होगी। तुम्हारी जो भी इच्छा हो, बतायें। मैं उसे अवश्य पूरा करूँगा।'

यह सुन कर सीता जी मुस्कुराकर बोलीं-'स्वामी, मैं तो केवल आपकी प्रसन्नता और कुशलता चाहती हूँ। मेरी और क्या इच्छा हो सकती है? फिर भी एक छोटी-सी बात मैं कहना चाहूँगी। वर्षों पूर्व जब हम वन में रहते थे तो ऋषियों के आश्रम में जाते थे। उस समय तो ऋषि-पत्नियों को मैं कुछ नहीं दे पाई, परन्तु अब मैं वहाँ जाकर अपनी

Scanned by CamScanner

इच्छानुसार उन्हें उपहार देना चाहती हूँ और उनके सान्निध्य में कुछ समय रहना चाहती हूँ।' रामचंद्र जी ने सीता जी की यह इच्छा पूरी करना स्वीकार कर लिया।

एक दिन प्रातःकाल एक गुप्तचर श्रीरामचंद्र जी से मिलने आया। उसका दायित्व रात्रि में वेश बदल कर पूरे राज्य में घूमना, लोगों की बातें सुनना और उसकी जानकारी राजा को देना था। उस रात उसने कुछ लोगों के मुँह से श्रीरामचंद्र जी की निंदा सुनी। यह उसका कर्तव्य था कि वह जो कुछ भी सुने, राजा को अक्षरशः बता दे।

उसने राजा से निवेदन किया, 'महाराज, अयोध्या की जनता आपकी भूरि–भूरि प्रशंसा करती है, लेकिन मैंने कुछ लोगों को यह कहते सुना है कि 'सीता तो रावण के महल में बंदी थी। राक्षसों का राजा रावण दूषित मानसिकता का व दुष्चरित्र था। फ़िर उसके बंदीगृह में सीता किस प्रकार शुद्ध रही होगी? श्रीराम ने सीता जी को वापस लाकर गलती की है।'

गुप्तचर ने आगे कहा, 'महाराज, इस प्रकार कुछ लोग आपके व सीता जी के बारे में अच्छी धारणा नहीं रखते।'

श्रीरामचंद्र जी यह सुनकर बहुत दुःखी हुए। वे जानते थे कि सीता पतिव्रता है और उसका चरित्र अत्यंत निर्मल है। उसने हमेशा उन्हीं का ही ध्यान किया है और वह पूर्णरूपेण पवित्र है। लेकिन वह यह भी जानते थे कि राजा का व्यवहार ऐसा होना चाहिये जिससे उसकी प्रजा उससे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहे। एक योग्य शासक की विशेषता यही है कि वह प्रजा के अविश्वास व संदेह से पूर्णतया परे हो। उसके आचरण की शुद्धता के प्रति प्रजा पूरी तरह से आश्वस्त हो।

Scanned by CamScanner

इसलिए रामचंद्र जी ने जनमत को दृष्टि में रखते हुए सीता का परित्याग करने का निश्चय किया। उन्होंने अपने अनुज लक्ष्मण को बुलाकर उसे गुप्तचर की कही बातें बताई और उसे आदेश दिया कि वे शीघ्र सीता जी को वन में वाल्मीकि के आश्रम के निकट छोड़ आयें। अपने बड़े भाई से ऐसा आदेश पाकर लक्ष्मण को गहरा आघात लगा।

लक्ष्मण ने श्रीरामचंद्र जी से इस पर पुनः विचार करने का बहुत आग्रह किया किन्तु वे सफल नहीं हुए। अन्ततः दुःखी होकर अपने बड़े भाई की आज्ञा का पालन करते हुए उन्हें अपनी भाभी को वन में छोड़ने के लिए जाना पड़ा।

लक्ष्मण एक रथ लेकर सीता जी के महल के सामने पहुँचे। उधर सीता जी ने अनुमान लगाया कि राम आज उनकी वन में जाने की इच्छा पूरी करना चाहते हैं। इसलिये लक्ष्मण उन्हें लेने आये हैं। यह सोच कर वे बहुत उत्साहित हो गईं। जल्दी जल्दी उन्होंने ऋषिपत्नियों को भेंट देने के लिए हल्दी, कुमकुम, चूड़ियाँ तथा स्वर्णाभूषणों के बंडल बनवाये। श्रीरामचंद्र जी राजमहल में नहीं थे तो उन्होंने अपनी सास कौशल्या जी से श्रीरामचंद्र तक सूचना पहुँचाने का अनुरोध किया। फिर वे रथ में बैठ कर लक्ष्मण जी के साथ वन में चली गईं।

वे गंगा के किनारे पहुँचे। पास ही ऋषि वाल्मीकि का आश्रम था लेकिन लक्ष्मण जी आश्रम तक नहीं गये। वे उसके निकट ही जंगल में रुक गये।

लक्ष्मण सीता जी से क्षमा माँगते हुए बोले – 'माँ, श्रीराम ने मुझे आपको वन में छोड़ने की आज्ञा दी है, क्योंकि कुछ लोगों ने शंका कर

Scanned by CamScanner

आपके प्रति बुरे विचार व्यक्त किये हैं। रावण के बंदीगृह से आपको वापस लाने पर वे श्रीराम पर दोषारोपण कर रहे हैं। राजा को प्रजा का विश्वास जीतना होता है, इसलिए श्रीराम को आपका परित्याग करना पड़ा है। इससे उन्हें अत्यंत पीड़ा हुई है, किन्तु वे विवश हैं। मैंने उनके आदेश का पालन किया है। मैं जानता हूँ कि आपको वन में छोड़ कर मैं बहुत बड़ा पाप कर रहा हूँ। परन्तु मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। कृपया मुझे क्षमा कर देना।'

फिर लक्ष्मण ने सीता जी के चरण स्पर्श किये और उन्हें वन में अकेला छोड़ अयोध्या लौट गये। सीता माँ अत्यंत व्यथित और शोकग्रस्त थीं।

लक्ष्मण के शब्द सीता जी को वज्र की तरह लगे। उन्हें अपने जीवन की सारी घटनाएँ याद आने लगीं। जिस स्त्री ने सदा अपने पति को परमेश्वर माना, क्या उसके जीवन का यही अंत होना चाहिये? वे यह सोच-सोच कर विलाप करने लगीं। इस पर भी उन्होंने अपने पति को दोष नहीं दिया और इस स्थिति को अपना दुर्भाग्य मान लिया।

यात्रा की थकान और मन में भीषण संताप होने से वे निष्प्राण हो गईं। निद्रा और थकान से निढाल होकर वे एक पेड़ के नीचे सो गईं।

उसी समय ऋषि वाल्मीकि के कुछ शिष्य अपने गुरु के लिए कुछ सामग्री व फूल-पत्ती लेने उधर आए। सीता जी का विलाप सुनकर वे स्तब्ध रह गये। सीता जी के पास आकर उन्होंने पूछा-'माँ, आप कौन हैं और जंगल में इस प्रकार विलाप करने का कारण क्या है? हम लोग ऋषि वाल्मीकि के शिष्य हैं। अतः आप कोई शंका न करें। गुरुजी का

Scanned by CamScanner

आश्रम निकट ही है, आप कृपा कर निस्संकोच हमारे साथ चलिए।'

वाल्मीकि मुनि का नाम सुनकर सीता जी को कुछ राहत मिली। उन्होंने साहस जुटाया और शिष्यों के साथ उनके आश्रम आ गयीं। सीता जी ने उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और अपनी संपूर्ण गाथा सुनायी। पूरी बात सुनकर वाल्मीकि द्रवित हो उठे और तरह-तरह से उन्होंने सीता जी को धीरज बँधाया। उन्होंने विश्वास दिलाया कि वे उनके रहने की व्यवस्था आश्रम में ही कर देंगे। उन्होंने आश्रम की महिलाओं को बुलाकर सीता जी की देखभाल करने का आदेश दिया और उन्हें बताया कि 'सीता जी अत्यंत सदाचारी नारी हैं और उनकी हर प्रकार से स्नेह, सम्मान एवं सावधानीपूर्वक देखभाल की जानी चाहिये।'

लव-कुश का जन्म

कुछ दिनों के बाद सीता जी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। वे बालक शुभ घड़ी, शुभ नक्षत्र, शुभ दिवस पर उत्पन्न हुए थे। दोनों बच्चे बहुत आकर्षक व सुन्दर थे। उनके मुखमण्डल पर दिव्य आभा चमक रही थी। उन्हें देखकर वाल्मीकि आनंदमग्न हो गये। जन्म के दसवें दिन उन्होंने एक बच्चे का नाम 'लव' तथा दूसरे का 'कुश' रखा।

आश्रम में लव-कुश बढ़ते चंद्रमा की तरह बड़े होने लगे। इन बालकों को प्रारम्भिक शिक्षा ऋषि वाल्मीकि ने स्वयं दी। बच्चों ने शीघ्र ही बहुत-सी प्रार्थनाएँ एवं गीत सीख लिए। वे अत्यंत कुशाग्र व बुद्धिमान थे। उनकी आवाज बड़ी सुरीली थी। जब वे गाते थे तो आस-पास के लोग व अन्य जीव मंत्रमुग्ध होकर उन्हें सुनते थे। वाल्मीकि अक्सर सीता जी के समक्ष लव-कुश से गीत गवाया करते थे जो सभी के लिए अमृत

Scanned by CamScanner

की भाँति होते थे। सीता जी उन्हें देख-सुन कर बहुत प्रसन्न होती थीं।

लव-कुश का उपनयन संस्कार

जब लव-कुश आठ वर्ष के हुये तो वाल्मीकि ने उनका उपनयन संस्कार किया। इसके बाद वे उन्हें वेद पढ़ाने लगे। इस समय तक उन्होंने 'रामायण' की रचना पूरी कर ली थी और वह भी बालकों को सुनाई।

दोनों बच्चों ने शीघ्र ही रामायण कंठस्थ कर ली और इतने मर्मस्पर्शी स्वर में उसे गाया कि वाल्मीकि आनन्दविभोर हो उठे। उन्होंने सीता जी के सामने बच्चों से रामायण गवाई। वे भी बहुत प्रसन्न हुईं।

श्रीराम की कहानी उन्हीं के सामने

आश्रम में दोनों बालक बड़े होते गये और विद्या की विभिन्न कलाओं-विधाओं में निपुण हो गये। इधर रामचंद्र जी ने अश्वमेध यज्ञ करवाया। राजाओं में अत्यंत वीर और बलशाली राजा ही इस यज्ञ को कर पाते थे। अश्वमेध करने वाले राजा को एक श्रेष्ठ प्रजाति वाले अश्व (घोड़े) की पूजा करनी होती थी।

फिर अश्व को घूमने के लिए खुला छोड़ दिया जाता था। यदि कोई दूसरा राजा अश्व को नियन्त्रित कर बाँध लेता तो उसे युद्ध में पराजित करना पड़ता था। इसी प्रकार जो राजा अश्वमेध यज्ञ करना चाहता था, उसे पृथ्वी के सभी राजाओं पर विजय प्राप्त कर चक्रवर्ती सम्राट बनना पड़ता था। जब अश्व सारे देशों में घुमकर वापस आ जाता तब अश्व का स्वामी यज्ञ कर सकता था। रामचंद्र जी ने भी यह अत्यंत साहसपूर्ण कार्य अपने हाथ में लिया।

Scanned by CamScanner

अश्वमेघ यज्ञ तथा लव-कुश का रामायण गायन

संयोग कुछ ऐसा रहा कि जब यह अश्व महर्षि वाल्मीकि के आश्रम के सामने पहुँचा तो लव-कुश ने उत्सुकतावश उसे रोक लिया। अश्व को दो ऋषिकुमारों द्वारा रोक लिये जाने का समाचार चारों ओर फैल गया। अश्व के रक्षकों ने लव-कुश से अश्व को छोड़ने के लिए कहा। रक्षकों ने उनसे बहुत आग्रह किया, परन्तु वे नहीं माने। फिर युद्ध हुआ, जिसमें लव-कुश के आगे बड़े-बड़े वीरों ने भी घुटने टेक दिये। जब लक्ष्मण को भी पीछे हटना पड़ा तो श्रीरामचंद्र जी स्वयं वहाँ पहुँचे और इन दोनों कुमारों के अदम्य साहस को देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

रामचंद्र जी ने महर्षि वाल्मीकि से इन दोनों कुमारों को यज्ञ में लाने का आग्रह किया। पृथ्वी के सभी राजाओं ने श्री राम को चक्रवर्ती सम्राट स्वीकार कर श्रद्धापूर्वक उन्हें उपहार भेंट किए। तब उन्होंने महान अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। धरती पर रहने वाले सभी ऋषि-मुनि इस अवसर पर आमंत्रित किये गये। वाल्मीकि भी अपने दोनों शिष्यों, लव-कुश के साथ वहाँ पहुँचे।

श्रीरामचंद्र जी का अश्वमेध यज्ञ समारोहपूर्वक कई दिनों तक चलता रहा। गरीबों को उनकी इच्छानुसार कपड़ा एवं भोजन दिया गया। ब्राह्मण और ऋषिगण दान-दक्षिणा पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए। अंतिम दिन जब सभी ऋषि-मुनि एक जगह एकत्रित हुए तब वाल्मीकि ने लव-कुश से 'रामायण' गाने को कहा।

उस दिन पूर्णिमा थी। एक शिष्य बाँसुरी बजाने लगा। बाँसुरी के स्वरों के साथ-साथ दोनों बालकों ने रामायण-गान आरंभ किया जो पूरी

Scanned by CamScanner

रात चलता रहा। उनके हृदयस्पर्शी गायन से पूरा वातावरण आल्हादित हो उठा। दोनों बालकों को अनेक उपहार दिये गये। अपने महाकाव्य तथा स्वर की इस प्रकार प्रशंसा होते देख वाल्मीकि की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा।

जिस रात्रि लव-कुश रामायण गा रहे थे, रामचंद्र जी अपने महल में विश्राम कर रहे थे। बालकों का मधुर गायन उन्हें अमृत की भाँति लगा। दूसरे दिन प्रातःकाल उन्होंने दोनों बालकों को बुलवाया। जब वे महल में पहुँचे तो रामचंद्र जी ने उनसे रामायण गाने का पुनः आग्रह किया।

अश्रुपूर्ण श्रीराम

जब लव-कुश ने रामायण गायी तो रामचंद्र जी ने उसमें अपनी ही गाथा पाई। वे बड़े प्रसन्न हुए। उन्हें अलौकिक अनुभूति हुई। गाथा में जब भी सीता का प्रसंग आता, श्रीराम की आँखों में अश्रु छलक आते। उनके मन में बार-बार एक विचार आता कि सीता ने उनसे विवाह किया परन्तु उसे क्या सुख मिला? सीता का पूरा जीवन कष्टपूर्ण रहा। सीता के दुःख व संताप के लिये मन-ही-मन वे स्वयं को दोषी मानने लगे। रुँधे स्वर में उन्होंने बालकों से पूछा-'बच्चों, बताओ तुम कौन हो?'

'हम सीता माता के पुत्र तथा वाल्मीकि ऋषि के शिष्य हैं।' लव-कुश ने उत्तर दिया।

सीता का नाम सुनकर रामचंद्रजी आश्चर्य में पड़ गये। वे विचार करने लगे - जिस सीता को मैंने वन में भेज दिया था, क्या उसी ने इन बच्चों को जन्म दिया? उन्होंने तुरंत ऋषि वाल्मीकि को बुलाया। रामचंद्र

Scanned by CamScanner

जी ने उनसे दोनों बालकों की कहानी विस्तार से सुनी। कहानी सुनकर वे सीता जी को पाने के लिए अत्यंत व्याकुल हो गये और उन्होंने सीता को बुलवाने की याचना की। उन्होंने सीता जी को अपनी महारानी के रूप में स्वीकार करने का विश्वास दिलाया।

वाल्मीकि ने अपने शिष्यों को भेज कर सीता जी को बुलवाया। उनके आने पर रामचंद्र जी बोले–'सीते! यहाँ एकत्र हुए ऋषि–मुनियों के सामने शपथपूर्वक कहो कि तुमने केवल मुझ से ही प्रेम किया है और तुम एक सदाचारी नारी हो ताकि जो लोग तुम पर शंका करते हैं, उनका भ्रम दूर हो जाये। उसके बाद मैं तुम्हें अपना लूँगा।'

वाल्मीकि ने दृढ़तापूर्वक इसका विरोध किया। वे बोले–'प्रभु, सीता नारियों में सर्वोत्तम तथा श्रेष्ठ हैं, वह सदाचारी हैं, पवित्रता और मर्यादा की प्रतिमूर्ति हैं। उनकी बार–बार परीक्षा मत लीजिए। उन्हें सबके समक्ष फिर शपथ ग्रहण करने की क्या आवश्यकता है? उनके हृदय पर पहले ही इतना बड़ा आघात है, उन्हें और पीड़ा न दें। आप वास्तव में सृष्टि के पालनकर्ता भगवान विष्णु हैं और सीता आपकी अर्धांगिनी देवी लक्ष्मी हैं। अब उनकी परीक्षा का कोई औचित्य नहीं है।'

लेकिन श्रीरामचंद्र जी इससे सहमत नहीं हुए। उन्होंने कहा, 'मान्यवर, लोगों की शंका दूर करने के लिए परीक्षा आवश्यक है।'

सीता जी इसमें लज्जा अनुभव करने लगीं। स्वर्ग से सभी देवता धरती पर एक श्रेष्ठतम नारी की परीक्षा देखने आये।

इन देवताओं और ऋषियों के समक्ष सीता जी ने भू–देवी (पृथ्वी की देवी) से प्रार्थना की, 'हे धरती माँ, यदि यह सत्य है कि मैंने श्रीराम के

Scanned by CamScanner

अतिरिक्त अन्य किसी का विचार नहीं किया है, अन्य किसी की पूजा नहीं की है तो मुझे अपनी भुजाओं में समा लो। यदि मेरे वचन सत्य हैं तो मुझे तुरंत अपनी गोद में ले लो।'

सीता जी की करुण पुकार सुनकर उसी समय पृथ्वी फट गई। भूतल से एक सिंहासन ऊपर आया जिस पर भूदेवी विराजमान थीं। भूदेवी के सिंहासन को चार सर्पों ने उठा रखा था। उसने सीता जी को अपनी भुजाओं में भर लिया और क्षणभर में ही सिंहासन सहित दोनों पृथ्वी में समा गये। उसके बाद फटी हुई पृथ्वी पुनः समतल हो गई।

सीता जी को भूगर्भ में समाया देख राम जोर-जोर से विलाप करने लगे। सीता जी भूदेवी की पुत्री थी, वे पुनः उनके गर्भ में समा गईं। श्री रामचंद्र जी ने भूदेवी से बहुत प्रार्थना की कि वे सीता जी को वापस लाकर दें। लेकिन उनका आग्रह, अनुरोध - सब व्यर्थ गया।

ब्रह्माजी प्रकट हुये

इसी समय विश्वविधाता ब्रह्मा जी वहाँ प्रकट हुए और श्री रामचंद्र जी को सांत्वना देते हुए बोले -

'आप मनुष्य नहीं, बल्कि विष्णु भगवान हैं। मनुष्य का जन्म आपने महाराक्षस रावण को मारने के लिए लिया था। वह उद्देश्य पूरा हो गया। अतः अब आपको वैकुंठ धाम चले जाना चाहिये। वहाँ आपकी धर्मपत्नी सीता लक्ष्मी के रूप में आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।'

श्री रामचंद्र जी ने अनुभव किया कि ब्रह्मा जी सत्य कह रहे हैं। इससे उनका संताप दूर हो गया। वहाँ उपस्थित देवता एवं ऋषि, सभी यह

Scanned by CamScanner

देखकर स्तब्ध रह गये। कुछ दिनों बाद श्री रामचंद्र जी पृथ्वी लोक छोड़कर वैकुंठ धाम चले गये।

ऋषि वाल्मीकि की कहानी बड़ी अनूठी तथा अर्थपूर्ण है। नारद मुनि के संपर्क व प्रेरणा से वे सामान्य जन 'रत्नाकर' से एक महान ऋषि, संत व योगी बने और विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य 'रामायण' की रचना की।

ऋषि वाल्मीकि कृत यह ग्रन्थ अनन्त काल से प्रत्येक घर में बड़ी श्रद्धा, स्नेह व आस्थापूर्वक सुना-सुनाया जाता है। ऐसे विलक्षण थे महातपस्वी व भारतीय महाकाव्य रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि।

Scanned by CamScanner